Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

## उत्तराखंड लोक सेवा आयोग (UKPSC)

# बोधगम्यता

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: UKC05

## उत्तराखंड लोक सेवा आयोग (UKPSC)

# सीसैट

# बोधगम्यता

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501
टोल फ्री : **1800-121-6260**
**Web:** www.drishtiIAS.com
**E-mail :** online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

# UKPCS DLP विषय सूची (Contents)


| | |
|---|---|
| 1. परिचय | 5 – 14 |
| 2. राजनीतिक | 15 – 22 |
| 3. सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक | 23 – 42 |
| 4. पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण | 42 – 56 |
| 5. विज्ञान और प्रौद्योगिकी | 57 – 63 |
| 6. दर्शन | 64 – 72 |
| 7. विविध | 73 – 84 |
| 8. English Comprehension | 85 – 110 |

अध्याय
1

# परिचय
# (Introduction)

बोधगम्यता शब्द का तात्पर्य किसी परीक्षार्थी के मानसिक रूप से किसी विषय को समझने, अवधारित करने की योग्यता, उसका संपूर्ण अर्थों में विश्लेषण एवं मूल्यांकन कर उस पर आधारित प्रश्नों का सटीक समाधान निकालने से है। बोधगम्यता के माधयम से परीक्षार्थी की विश्लेषणात्मक तथा तार्किक क्षमता के साथ शब्दों के सटीक अर्थ को समझने के बाद निर्णय लेने की प्रवृत्ति का परीक्षण किया जाता है।

बोधगम्यता में सामान्यत: एक अनुच्छेद मूलत: किसी उद्धत पाठ का एक अंश, किसी घटना विशेष का उल्लेख या फिर अन्य किसी भाषा के पाठ का अनुवाद होता है। जिसके बाद उस पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न पूछे जाते हैं। बहुविकल्पीय प्रश्नों को पूछने का उद्देश्य परीक्षार्थी की बोधगम्यता का अवलोकन करते हुए निर्णयन शक्ति का परीक्षण करना होता है।

वर्तमान समय में लोक सेवा आयोग की विभिन्न परीक्षा प्रणालियों में बोधगम्यता को विशेष स्थान दिया गया है, जिसके द्वारा किसी भी कुशल प्रशासनिक अधिकारी की निम्नलिखित दक्षताओं को जाँचा जा सके-

1. पठित परिच्छेद की विषय वस्तु की समझ
2. परिस्थितिजन्य बोध क्षमता
3. विचारों का क्रियान्वयन
4. कार्य की प्राथमिकता का मापदंड
5. भविष्य का दृष्टिकोण
6. न्याय-निर्णयन क्षमता

***परिच्छेद पढ़ने के तरीके***

पढ़ना किसी भी परीक्षा प्रबंधन में विशेष बढ़त दिलाता है, किंतु परिच्छेद को पढ़ना अन्य विषय को पढ़ने की तुलना में विशेष आयामों के अनुपालन की विशेष मांग करता है। परिच्छेद को पढ़ते समय परीक्षार्थियों को निम्नलिखित आयामों का अनुपालन करना चाहिये।

**परिच्छेद को पढ़ने से पहले:** किसी भी परिच्छेद को पढ़ने से पहले परीक्षार्थी को उस पर आधारित प्रश्नों को सावधानीपूर्वक पढ़ लेना प्रश्नों के उतर देने में विशेष सहायता प्रदान करता है, क्योंकि प्रश्न को पहले पढ़ने से कभी-कभी बिना समय खर्च किये प्रश्न का उत्तर आसानी से ज्ञात किया जा सकता है। परीक्षार्थियों को उपयुक्त तकनीकियों का अभ्यास करना चाहिये, जिसका प्रयोग परीक्षार्थी परिच्छेद पढ़ने के दौरान करना चाहते हैं।

**परिच्छेद पढ़ने के दौरान:** सबसे मुख्य प्रक्रिया परिच्छेद के पढ़ने के दौरान अनुपालन की है, क्योंकि इस समय परीक्षार्थी की एकाग्रता उत्तर चुनने में सहायक सिद्ध होती है। अत: परीक्षार्थियों को निम्नलिखित बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिये।

1. परिच्छेद को समझते हुए एकाग्रचित होकर शीघ्रता से पढ़ें, न कि पढ़ने की गति पर विशेष ध्यान दें। गति तीव्र करने से कभी-कभी एकाग्रचित्तता भंग हो जाती है।
2. परिच्छेद को पढ़ते समय किसी भी प्रकार का दबाव महसूस न करें तथा मस्तिष्क को तनाव मुक्त रखें।
3. परिच्छेद की संरचना का उपयोग करते हुए समझें कि लेखक द्वारा परिच्छेद का विचार कैसे और क्यों विकसित किया गया है।
4. परिच्छेद को पढ़ते हुए शुरू करने के साथ इस बात का अनुमान लगाएँ कि इस परिच्छेद की विषय वस्तु क्या है तथा लेखक परिच्छेद के माध्यम से क्या कहना चाहता है।
5. परिच्छेद पर आधारित प्रश्नों के सही विकल्प चुनते समय परिच्छेद को बार-बार पढ़ने के बजाय लेखक की मुख्य बातों को ध्यान में रखते हुये चिह्नित करें।
6. परिच्छेद की सूचनाओं को व्यवस्थित करें तथा स्पष्ट समझ के लिये इन सूचनाओं को प्रथम परिच्छेद से जोड़ें।
7. संकेतक का प्रयोग करते हुए जैसे कि पेंसिल इत्यादि से परिच्छेद के महत्त्वपूर्ण शब्द तथा सूचनाओं को चिह्नित करें।
8. संकेतक का प्रयोग अनावश्यक रूप से, जैसे कि सभी पंक्तियों को रेखांकित करना या सामान्य शब्दों को रेखांकित करना लाभदायक सिद्ध नहीं होता है। इससे सिर्फ समय नष्ट होगा।
9. प्रश्नों में दिये गए विकल्पों में से गलत विकल्पों को पहले हटा दें, उनमें वे विकल्प पहले हटाएँ, जिन विकल्पों में परिच्छेद से इतर तथ्य तथा सूचनाएँ दी गई हैं। इससे सही विकल्प चुनने में आसानी होगी।
10. लेखक की परिच्छेद के बारे में क्या राय एवं विचार है, को व्यक्त करें।
11. कभी-कभी भाषानुवाद भावानुवाद को बदल देता है। इसके लिये अंग्रेजी भाषा में अनुवाद से संबंधित शब्द को जरूर देखें।

12. परिच्छेद को पढ़ने के बाद समझने के लिये स्वयं के ज्ञान का समावेश न करें। इससे गलत विकल्प चुने जाने की संभावना बढ़ जाती है।
13. संपूर्ण परिच्छेद को पढ़ते समय मुख्य शब्दों जैसे कि सभी, केवल, सिर्फ कुछ, अत्यधिक, कभी-कभी आदि शब्दों का विशेष ध्यान रखें। सामान्यत: ऐसे शब्द विकल्पों को प्रभावित करते हैं।

**पश्चगमन:** पश्चगमन एक दोषपूर्ण वृत्ति है। जब कोई पाठक किसी विषय को पढ़ते हुए पढ़े हुए शब्दों पर दुबारा नजर डालता है, यहाँ तक कि पंक्ति में कई शब्द पीछे तक के शब्दों को दुबारा पढ़ना ही पश्चगमन कहलाता है। पश्चगमन के द्वारा लगभग-लगभग 15–20% शब्दों को दुबारा पढ़ा जाता है, जिससे कि परीक्षार्थी को परिच्छेद पढ़ने में सामान्य से ज्यादा समय लगता है। पश्चगमन एकाग्रता को भंग करने में भी उत्प्रेरक का कार्य करता है। परीक्षार्थियों द्वारा संकेतक का प्रयोग जैसे कि पेंसिल, उँगली इत्यादि से पश्चगमन की समस्या को कम किया जा सकता है, क्योंकि हमारी आँखें संकेतक की गति का अनुसरण करती हैं।

**संकेतक का उपयोग:** उपर्युक्त से स्पष्ट है कि संकेतक पश्चगमन पर नियंत्रक का कार्य करता है। जहाँ संकेतक पाठन को गति प्रदान करता है, वहीं एकाग्रता लाने में भी सहायक सिद्ध होता है। परीक्षार्थी द्वारा परिच्छेद पाठन के दौरान संकेतक का प्रयोग इसलिये भी जरूरी हो जाता है कि वह मुख्य शब्दों, पंक्तियों को चिह्नित करने में सहायक सिद्ध होता है।

**परिच्छेद पढ़ने की तीव्रता:** उपर्युक्त से स्पष्ट है कि परिच्छेद को पढ़ने की तीव्रता में संकेतक सहायक होता है, किंतु किसी भी परीक्षा में समय की पाबंदी होने से परीक्षार्थियों को चाहिये कि किसी भी परिच्छेद को एक बार में ही समझते हुए पढ़ा जाए, न कि बार-बार पढ़ा जाए, ताकि समय बच सके।

**व्याकरण तथा महत्त्वपूर्ण शब्दावली का महत्त्व:** व्याकरण की समझ तथा महत्त्वपूर्ण शब्दों का ज्ञान बोधगम्यता में उत्प्रेरक का कार्य करता है। ध्यान रहे कि बोधगम्यता में व्याकरण की समझ जरूरी है, न कि स्मरण, वहीं दूसरी ओर महत्त्वपूर्ण शब्दावली का ज्ञान होना किसी भी बोधगम्यता को और आसान बना देता है। जैसे कि 'ईद का चाँद' होना जिसका कि विशेष अर्थ है- 'बहुत दिनों बाद दिखाई देना'। यदि परीक्षार्थी इसके अर्थ के बारे में नहीं जानता है तो वह इन शब्दों की अलग ही व्याख्या निकालेगा तथा कभी-कभी परिच्छेद में एक शब्द के लिये अन्य समान शब्दों का प्रयोग भी किया जाता है।

**रेखांकित शब्दों/भाग का महत्त्व:** कभी-कभी परिच्छेद में रेखांकित शब्द या रेखांकित भाग से सीधे प्रश्न पूछा जाता है। जैसे कि रेखांकित शब्द का अर्थ, या उसका समान शब्द, उसी प्रकार रेखांकित भाग के लिये एक शब्द इत्यादि पूछा जा सकता है। अत: परीक्षार्थियों को परिच्छेद पढ़ते हुए इस प्रकार के शब्दों/भाग पर विशेष ध्यान देना चाहिये।

**परिच्छेद के प्रश्नों के प्रकार:** लोक सेवा आयोग द्वारा विभिन्न वर्षों में पूछे गए परिच्छेद आधारित प्रश्नों को उनकी प्रकृति के आधार पर निम्नलिखित प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है।

1. **मूल विचार के प्रकार के प्रश्न:** इस प्रकार के प्रश्नों के तहत परीक्षार्थियों से परिच्छेद का मूल विचार या केंन्द्रीय विषय क्या है, पूछा जाता है। इसके अलावा लेखक का प्रारंभिक उद्देश्य के साथ-साथ परिच्छेद की विषयक विशिष्टता संबंधी प्रश्न पूछे जाते हैं।
2. **विशिष्ट प्रकार के प्रश्न:** इस प्रकार के प्रश्नों के तहत परीक्षार्थियों से कई तरीके से प्रश्न पूछे जाते हैं जैसे कि दिये गए विकल्पों में से कौन-सा विकल्प सत्य है या किस विकल्प के साथ परिच्छेद का लेखक ज्यादा सहमत है।
3. **वाक्यपूर्ण करने संबंधी प्रकार के प्रश्न:** इस प्रकार के प्रश्नों में किसी विशेष उद्देश्य की प्राप्ति संबंधी प्रश्न को अपूर्ण वाक्य के द्वारा पूछा जाता है।
4. **अनुमान आधारित प्रश्न:** इस प्रकार के प्रश्नों में लेखक द्वारा कौन-सी अवधारणा व्यक्त की गई है पर अनुमान आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं या फिर लेखक किसी विशेष भाग में आलोचना क्यों कर रहा है इत्यादि।
5. **तकनीक आधारित प्रश्न:** इस प्रकार के प्रश्नों में किसी विशेष परिच्छेद या संपूर्ण परिच्छेद में लेखक द्वारा कौन-सी या किस तरह की तकनीक का प्रयोग किया गया है, संबंधी प्रश्न पूछे जाते हैं।
6. **नकारात्मक प्रकार के प्रश्न:** इस प्रकार के प्रश्नों में नकारात्मक शब्द जैसे कोई नहीं, कभी नहीं इत्यादि शब्दों का प्रयोग होता है।
7. **शैली आधारित प्रश्न:** इस प्रकार के प्रश्नों में परिच्छेद की किसी विशेष पंक्ति भाग या फिर संपूर्ण परिच्छेद में लेखक द्वारा किस प्रकार की शैली का प्रयोग किया गया है, से संबंधित प्रश्न पूछे जाते हैं।
8. **कथनों के संयोजन पर आधारित प्रश्न:** इस प्रकार के प्रश्नों में दो या दो से अधिक कथनों से प्रश्न पूछे जाते हैं, जैसे कि केवल I सही है, केवल II सही है या I, II और III सभी सही है इत्यादि।

**लेखन की शैली के आधार पर परिच्छेद के प्रकार:** परिच्छेद की शैली किस प्रकार की है। इस पर आधारित प्रश्न बोधगम्यता परीक्षण में सामान्यत: पूछे जाते हैं, जैसे कि परिच्छेद की शैली किस प्रकार की है। सामान्यत: परिच्छेद में निम्नलिखित प्रकार की शैली का प्रयोग किया जाता है –

1. **विवरणात्मक शैली:** विवरणात्मक शैली के तहत परिच्छेद में किसी विशेष घटना, यात्रा इत्यादि को समय की क्रमबद्धता के अनुसार विवरण प्रस्तुत किया जाता है अर्थात् किसी घटना के विशेष चरणों का विवरण दिया जाता है।
2. **वर्णनात्मक शैली:** वर्णनात्मक शैली के तहत परिच्छेद में किसी स्थान, व्यक्ति या वस्तु के बारे में एक आरेख की तरह वर्णन प्रस्तुत किया जाता है।
3. **व्याख्यात्मक शैली:** व्याख्यात्मक शैली के तहत परिच्छेद में किसी भी वस्तु, घटना, पाठ इत्यादि को परिभाषा, उदाहरण आदि की सहायता से व्याख्यापित किया जाता है।
4. **निर्वचनात्मक शैली:** निर्वचनात्मक शैली के तहत परिच्छेद में लेखक तटस्थता दिखाते हुए निर्वाचन करता है।
5. **आलोचनात्मक शैली:** आलोचनात्मक शैली के तहत परिच्छेद में लेखक किसी समूह वर्ग या व्यक्तिगत क्रिया विधि इत्यादि की आलोचना के माध्यम से अपने विचार व्यक्त करता है।

**परिच्छेद के पूछे जाने के क्षेत्र:** लोक सेवा आयोग द्वारा बोधगम्यता परीक्षण में विभिन्न क्षेत्रों से परिच्छेद चुने जाते हैं, जैसे कि पर्यावरण, सामाजिक, साहित्य, दर्शन इत्यादि। उसी आधार पर यहाँ कुछ महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों से परिच्छेद चुनकर उनकी व्याख्या की जा रही है।

## राजनीतिक

निम्नलिखित परिच्छेदों को पढ़ें और अनुसरित प्रश्नों के उत्तर दें।

**परिच्छेद-1**

लोकतंत्र व लोकसेवाएँ दोनों का मूल तत्त्व 'लोक' अर्थात् 'जनता' होता है। किसी स्वस्थ लोकतांत्रिक शासन प्रणाली की जीवंतता तथा सार्थकता इस बात से तय होती है कि वह शासन-प्रणाली सामाजिक-आर्थिक न्याय को अंतिम जन तक कितनी ईमानदारी व सक्रियता से पहुँच पा रही है और आधुनिक लोकतांत्रिक प्रणाली में यहीं पर सिविल सेवाओं की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो जाती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय देश की समस्याओं यथा-गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा, मूलभूत अवसंरचनाओं की कमी, स्वास्थ्य मानकों का कमजोर होना आदि के समाधान के लिये सिविल सेवा की ओर ही देखा गया था; परंतु लोगों में जागरूकता की कमी, प्रशासकों की जवाबदेही तय करने वाले अवस्थित तंत्र के अभाव, प्रशासन में तकनीकी का बेहतर प्रयोग न होने इत्यादि के कारण लोक सेवाएँ अपनी अपेक्षित भूमिका पर खरी नहीं उतरी।

1. परिच्छेद के अनुसार स्वस्थ लोकतंत्र की क्या कसौटी है?
   (a) सामाजिक-आर्थिक न्याय की अंतिम जन तक पहुँच
   (b) आर्थिक क्रिया विधि की सक्रियता
   (c) अत्याधुनिक तकनीकी का प्रयोग
   (d) उपर्युक्त सभी

**व्याख्या:** (a) परिच्छेद के प्रारंभ में स्पष्ट तौर पर कहा गया है कि किसी स्वस्थ लोकतांत्रिक शासन-प्रणाली की जीवंतता तथा सार्थकता अर्थात् कसौटी उसकी शासन-प्रणाली के द्वारा सामाजिक-आर्थिक न्याय को अंतिम जन तक पहुंचना है। इस प्रकार विकल्प (a) सही है, जबकि परिच्छेद के अनुसार आर्थिक क्रियाविधि की सक्रियता तथा अत्याधुनिक तकनीकी के प्रयोग को लोकतंत्र की कसौटी नहीं माना गया है। इसलिये विकल्प (b) तथा (c) गलत है। अत: सही उत्तर विकल्प (a) होगा।

2. उपर्युक्त परिच्छेद के लिये उपयुक्त शीर्षक क्या होगा?
   (a) लोकतंत्र के सामने चुनौतियाँ
   (b) लोकतंत्र का बढ़ता दायरा
   (c) लोकतंत्र में सिविल सेवाओं की भूमिका
   (d) लोकतांत्रिक चुनाव प्रक्रिया

**व्याख्या:** (c) यह केंन्द्रीय विषय या मुख्य शीर्षक का प्रश्न है। परिच्छेद के आधार पर 'लोकतंत्र में सिविल सेवाओं की भूमिका' उपयुक्त शीर्षक है जबकि अन्य कोई विकल्प इतना प्रासंगिक नहीं है। इस प्रकार विकल्प (c) सही उत्तर है।

3. परिच्छेद के अनुसार निम्नांकित में से कौन-सा कारण लोक सेवाओं के अपेक्षित भूमिका पर खरा उतरने के लिये उत्तरदायी नहीं है?
   (a) लोगों में जागरूकता की कमी
   (b) प्रशासन में तकनीकी का बेहतर प्रयोग
   (c) व्यवस्थित तंत्र का अभाव
   (d) उपर्युक्त सभी

**व्याख्या:** (b) परिच्छेद के अनुसार लोकसेवाओं का अपनी अपेक्षित भूमिका पर खरा न उतरने के पीछे लोगों में जागरूकता की कमी इस प्रकार विकल्प (a) सही उत्तर नहीं हो सकता, दूसरा कारण प्रशासकों की जवाबदेही तय करने वाले व्यवस्थित

तंत्र का अभाव इसलिये विकल्प (c) भी सही उत्तर नहीं हो सकता। तीसरा कारण प्रशासन में तकनीकी का बेहतर प्रयोग न होना था, जबकि विकल्प (b) में प्रशासन में तकनीकी का बेहतर प्रयोग कहा गया है। इस प्रकार विकल्प (b) सही उत्तर है।

**परिच्छेद-2**

न्यायिक सक्रियता किन अर्थों में वरदान स्वरूप है? इसके लिये इतिहास के कुछ पन्ने पलटने होंगे। सत्तर के दशक के अंत में न्यायालयों द्वारा यह महसूस किया गया कि गरीबों की समस्याएँ उन समस्याओं से अलग हैं, जिनका समाधान अब तक न्यायालयों द्वारा किया जाता रहा है। इन समस्याओं को सुलझाने के लिये न्यायालय की कार्यवाही भिन्न तरीके से चलाने की आवश्यकता थी। इसके लिये भिन्न तरह के विधि कौशल की भी जरूरत थी।

इस प्रक्रिया के तहत न्यायिक सृजनात्मकता का विकास हुआ। न्यायिक सक्रियता के माध्यम से भारत में मूलभूत अधिकारों एवं प्राकृतिक न्याय की सीमा का विस्तार किया गया। इस प्रक्रिया में संविधान के कुछ भागों की नई व्याख्या की गई है। गरिमापूर्ण जीवन का अधिकार आपराधिक मामलों में विधि सहायता, अभिरक्षण संस्थाओं में उचित बर्ताव, मुकदमे की त्वरित सुनवाई, बर्बर एवं अन्य अमानवीय बर्ताव के खिलाफ संरक्षण जैसे अधिकार इसी प्रयास में लोगों को प्राप्त हुए। इन सबसे लोगों में न्यायालय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बना। इसके माध्यम से न्यायालय ने अपनी नैतिक सत्ता का विस्तार किया तथा एक नई विश्वसनीयता कायम की।

1. परिच्छेद के अनुसार निम्नलिखित कथनों में कौन-सा कथन सत्य है?
   (a) सत्तर के दशक के प्रारंभ में न्यायालयों द्वारा गरीबों की समस्याओं को समझा गया।
   (b) गरीबों की समस्या को सुलझाने के लिये न्यायालय सदैव तत्पर रहे हैं।
   (c) न्यायिक सक्रियता से लोगों में न्यायालय के प्रति सकारात्मक सोच विकसित हुई।
   (d) (a), (b) और (c) तीनों सही हैं।

**व्याख्या:** (c) परिच्छेद के अनुसार न्यायालय द्वारा गरीबों की समस्याओं को सत्तर के दशक के अंत में समझा गया। इस प्रकार विकल्प (a) सही नहीं है। वहीं दूसरी ओर गरीबों की समस्या को सुलझाने के लिये न्यायालय सत्तर के दशक के अंत से सक्रिय हुआ है। इस प्रकार विकल्प (b) भी सही नहीं है, जबकि परिच्छेद के अनुसार न्यायिक सक्रियता से लोगों में न्यायालय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बना है। अत: विकल्प (c) सही उत्तर है।

2. परिच्छेद के अनुसार निम्न में से किस अधिकार की प्राप्ति न्यायिक सक्रियता के माध्यम से नहीं हुई?
   (a) गरिमापूर्ण जीवन का अधिकार
   (b) अपराधियों को विधिक सहायता
   (c) मुकदमे की त्वरित सुनवाई
   (d) (a), (b) तथा (c) तीनों में से कोई नहीं

**व्याख्या:** (b) परिच्छेद के अनुसार न्यायिक सक्रियता के माध्यम से गरिमापूर्ण जीवन का अधिकार मिला। इस प्रकार विकल्प (a) सही उत्तर नहीं है। किसी भी मुकदमे की तीव्र सुनवाई भी न्यायिक सक्रियता की देन है। इसलिये विकल्प (c) भी सही उत्तर नहीं है, जबकि न्यायिक सक्रियता के माध्यम से आपराधिक मामलों मे विधिक सहायता प्रदान हुई न कि अपराधियों को विधिक सहायता। अत: विकल्प (b) सही उत्तर है।

3. उपर्युक्त परिच्छेद के लिये निम्नलिखित में सबसे उचित शीर्षक क्या होगा?
   (a) न्याय और कानून
   (b) न्यायिक सक्रियता का उदय
   (c) न्याय-निर्माण प्रक्रिया
   (d) इनमें से कोई नहीं।

**व्याख्या:** (b) परिच्छेद के अनुसार सबसे उचित शीर्षक 'न्यायिक सक्रियता का उदय' है, जबकि अन्य विकल्प इतने प्रासंगिक नहीं हैं।

## सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक

निम्नलिखित परिच्छेदों को पढ़ें और अनुसरित प्रश्नों के उत्तर दें।

**परिच्छेद-1**

जनसांख्यिकीय लाभांश के चलते भारत के पास विश्व की सबसे युवा कार्यशील जनसंख्या है, जिसकी औसत आयु चीन एवं ओ.ई.सी.डी देशों की इसी वर्ग की जनसंख्या से कम है। भारत के पास कार्यशील जनसंख्या के इस बड़े वर्ग के साथ-साथ 2020 तक वैश्विक अर्थव्यवस्था में 56 मिलियन दक्ष मानव शक्ति की कमी होने की भी आशंका है। इस प्रकार भारत में मौजूद जनसांख्यिकीय लाभांश का न केवल उत्पादन की संभावना का विस्तार करने की दृष्टि से दोहन किये जाने की आवश्यकता है, बल्कि इससे भारत और विदेश में दक्ष मानव शक्ति की आवश्यकता की पूर्ति करना है।

1. परिच्छेद के अनुसार ऐसा माना जा रहा है कि चीन और ओ.ई.सी.डी देशों की तुलना में भारत कुछ लाभ अधिक प्राप्त कर रहा है, निम्न में से एक ऐसा लाभ कौन-सा है?

(a) उत्पादक कार्यबल (b) कुशल मानव शक्ति
(c) युवा कार्यबल (d) जन्मदर में कमी

**व्याख्या:** (c) परिच्छेद के अनुसार प्रारंभिक पंक्तियों में स्पष्ट कहा गया है कि भारत के पास विश्व की सबसे युवा कार्यशील जनसंख्या है, जिस कारण औसत आयु चीन एवं ओ.ई.सी.डी. देशों से कम है, जिनका कि भारत लाभ प्राप्त कर रहा है। इस प्रकार विकल्प (c) सही उत्तर है, जबकि जन्मदर में कमी, उत्पादक कार्यबल का गद्यांश में कोई उल्लेख नहीं है।

2. परिच्छेद के अनुसार निम्नलिखित कथनों में कौन-सा कथन सत्य है?

(a) भारत में मौजूद जनसांख्यिकीय लाभांश का उत्पादन में पूर्ण दोहन किया जा चुका है।
(b) भारतीय जनसांख्यिकीय लाभांश विदेशों में भी दक्ष मानव शक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति कर रहा है।
(c) (a) और (b) दोनों कथन सत्य हैं।
(d) (a) और (b) दोनों कथन असत्य हैं।

**व्याख्या:** (d) परिच्छेद के अनुसार दोनों कथन असत्य हैं। इसीलिये विकल्प (d) सही उत्तर है, क्योंकि भारत में मौजूद जन-सांख्यिकीय लाभांश के उत्पादन में पूर्ण दोहन किये जाने की आवश्यकता है। वहीं विदेशों में भी दक्ष मानव शक्ति की आवश्यकता पूर्ति भविष्य में करनी है, न कि वर्तमान में कर रहा है।

**परिच्छेद-2**

विपणन संचार में मूल्य व्यवस्था के स्थान को लेकर हमेशा एक प्रश्न उठता रहता है। क्या उपभोक्तावाद के इस 'श्रेष्ठतावादी' विचार का अनुसरण करने की आवश्यकता है? क्यों न हम ऊर्जा संरक्षण अथवा पर्यावरण संरक्षण या सुरक्षा को बढ़ावा दें और केवल उत्पादों के रंग-रूप और उपयोग में सहूलियत होने को प्रोत्साहित न करें? क्या हमें इस तरह के विपणन संचार को प्रोत्साहित करना चाहिये? अधिकांश भारतीय कंपनियाँ अपने कारोबार का लगभग 1 प्रतिशत विज्ञापन पर खर्च करती हैं, जो प्राय: उनके द्वारा शोध और विकास पर किये गए खर्च से अधिक होता है।

1. परिच्छेद के अनुसार 'श्रेष्ठतावादी' की परिभाषा क्या हो सकती है?

(a) विज्ञापन के माध्यम से प्रतिस्पर्धी को बाहर करने की कला
(b) प्रतिस्पर्धा जीतना
(c) प्रत्येक जगह सूचना का प्रसार करना
(d) महँगी विपणन संचार प्रक्रिया

**व्याख्या:** (a) परिच्छेद के अनुसार 'श्रेष्ठतावादी' कंपनियों के बीच प्रचलित विज्ञापन संस्कृति को संदर्भित है। श्रेष्ठतावादी एक प्रक्रिया नहीं है, यह कंपनियों में लाभ अर्जित करने का विश्वास है। इस प्रकार (a) सही विकल्प है, जबकि अन्य विकल्प सटीक परीक्षण में शामिल नहीं हो सकते हैं।

2. परिच्छेद के अनुसार निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य है?

(a) उपभोक्तावाद में ऊर्जा संरक्षण तथा पर्यावरण संरक्षण का एक अहम कार्य है।
(b) भारतीय कंपनियाँ शोध और विकास कार्य पर अत्यधिक खर्च करती हैं।
(c) (a) और (b) दोनों कथन सही हैं।
(d) (a) और (b) दोनों कथन गलत हैं।

**व्याख्या:** (d) परिच्छेद के अनुसार उपभोक्तावाद में ऊर्जा संरक्षण तथा पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने की जरूरत है, न कि इसका अहम हिस्सा है। इस प्रकार विकल्प (a) गलत है। वहीं भारतीय कंपनियाँ शोध और विकास कार्य पर अपने कुल कारोबार का सिर्फ 1 प्रतिशत ही खर्च करती हैं। इसलिये विकल्प (b) भी गलत है। अत: सही उत्तर विकल्प (d) है।

3. उपर्युक्त परिच्छेद की शैली किस प्रकार की है?

(a) व्याख्यात्मक शैली (b) आलोचनात्मक शैली
(c) विवरणात्मक शैली (d) वर्णनात्मक शैली

**व्याख्या:** (b): उपर्युक्त परिच्छेद की शैली आलोचनात्मक है, क्योंकि उपभोक्तावाद के माध्यम से कंपनियों की कार्य प्रणाली की आलोचना की गई है।

## पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण

निम्नलिखित परिच्छेदों को पढ़ें और अनुसरित प्रश्नों के उत्तर दें।

**परिच्छेद-1**

ठोस अपशिष्ट के जैव भाग को खाद में बदलने के अनेक लाभ हैं, जैसे कि निस्तारण योग्य अपशिष्ट की मात्रा में कमी, खाद भंडारण के पर्यावरणीय प्रभावों की कमी और कृषि कार्यों में उपयोग के लिये सुरक्षित सामग्री का उत्पादन। अफ्रीकी महाद्वीप के कुछ देशों की भाँति, कुछ अन्य देशों की मृदा में जैव पदार्थ की मात्रा में वृद्धि की आवश्यकता

मृदा मे पोषक तत्त्वों की वापसी की दृष्टि से जैव अपशिष्ट पुनर्चक्रण का एक प्रमुख कारण है। जैव कृषि गतिविधियों के साथ-साथ मृदा उर्वरता में सुधार की दृष्टि से खाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

1. परिच्छेद के अनुसार ठोस अपशिष्ट के जैविक अंश को खाद में बदलने से कौन-सा लाभ अर्जित किया जा सकता है?
   (a) पर्यावरणीय धारणीयता
   (b) पोषक तत्त्वों की प्रचुरता
   (c) मृदा की उर्वरता में वृद्धि
   (d) विक्रय योग्य खाद उत्पाद

**व्याख्या:** (c) परिच्छेद के अनुसार ठोस अपशिष्ट के जैविक अंश को खाद में बदलने से अर्जित लाभ में पर्यावरणीय धारणीयता का कोई उल्लेख नहीं है इस प्रकार विकल्प (a) सही होने की कोई संभावना नहीं है। इसी प्रकार पोषक तत्त्वों की प्रचुरता तथा विक्रय योग्य खाद उत्पाद के लाभों का भी कोई उल्लेख नहीं किया गया है, जबकि परिच्छेद के अंत में ठोस अपशिष्ट के जैविक अंश को खाद में बदलने से मृदा की उर्वरता में वृद्धि होने से लाभ होगा। इस प्रकार विकल्प (c) सही उत्तर है।

2. परिच्छेद के अनुसार कृषि भूमि पर ही खाद का प्रबंधन करने पर प्रत्यक्ष परिणाम निम्नलिखित में से क्या हो सकता है?
   (a) फल और सब्जियों की अधिकाधिक पैदावार
   (b) मृदा की उर्वरता में सुधार
   (c) खाद की मात्रा एवं वजन में कमी
   (d) उपर्युक्त सभी

**व्याख्या:** (b) खाद की मात्रा और वजन में कमी खाद के प्रबंधन या रख-रखाव को इंगित करता है और यह खाद की मात्रा में कमी का प्रत्यक्ष प्रतिफल नहीं हो सकता है। इसके फलस्वरूप कई प्रतिफल प्राप्त होते हैं। इस प्रकार विकल्प (c) सही नहीं हो सकता। परिच्छेद के अंत में लिखा गया है कि खाद से मृदा की उर्वरता में सुधार होता है, जिससे सब्जियों एवं फलों की अधिकाधिक पैदावार होती है। अत: प्रत्यक्ष प्रतिफल मृदा उर्वरता में सुधार का होना है, न कि बेहतर पैदावार का प्राप्त होना। अत: सही विकल्प (b) है।

**परिच्छेद-2**

भारत विश्व के दस सर्वाधिक आपदा प्रवण देशों में से एक है। यह देश कई कारणों से आपदा प्रवण क्षेत्र है; प्राकृतिक और मानव प्रेरित दोनों ही इसके अलावा प्रतिकूल भू-जलवायविक दशाएँ, स्थलाकृति विशेषताएँ, पर्यावरणीय ह्रास, जनसंख्या वृद्धि, नगरीकरण, औद्योगीकरण तथा गैर-वैज्ञानिक विकासीय गतिविधियाँ इत्यादि। ये कारण या तो आपदाओं के वास्तविक स्वरूप अथवा उनकी तीव्रता तथा आवृत्ति को बढ़ाकर मानव जीवन को भयंकर रूप से प्रभावित करते हैं तथा देश में जीवन समर्थन प्रणाली को बाधित करते हैं।

1. परिच्छेद के अनुसार भारत के अत्यधिक आपदा प्रवण होने के क्या कारण हैं?
   (a) विकास प्रक्रिया के कारण
   (b) जनसंख्या वृद्धि के कारण
   (c) भूगोल के कारण
   (d) उपर्युक्त सभी

**व्याख्या:** (d) परिच्छेद के अनुसार भारत के अत्यधिक आपदा प्रवण होने के कारण गैर-वैज्ञानिक विकासीय गतिविधियाँ, जनसंख्या वृद्धि एवं भू-जलवायविक दशाएँ इत्यादि शामिल है। अत: (a), (b) और (c) तीनों सही है। इस प्रकार विकल्प (d) सही उत्तर है।

2. परिच्छेद के अनुसार निम्न में से कौन-सा कथन सत्य है?
   (a) भारत के आपदा प्रवण क्षेत्र के कारण सिर्फ मानव प्रेरित है।
   (b) आपदाएँ मानव जीवन को सामान्य रूप से प्रभावित करती हैं।
   (c) (a) और (b) दोनों कथन असत्य हैं।
   (d) (a) और (b) दोनों कथन सत्य हैं।

**व्याख्या:** (c) परिच्छेद के अनुसार भारत के आपदा प्रवण क्षेत्र के मानव तथा प्राकृतिक दोनों कारण प्रेरित हैं। इसलिये विकल्प (a) असत्य है, जबकि परिच्छेद के अंत में कहा गया है कि आपदाएँ मानव जीवन को भयंकर रूप से प्रभावित करती है। अत: विकल्प (b) भी असत्य है। इस प्रकार विकल्प (c) सही उत्तर है।

## विज्ञान और प्रौद्योगिकी

निम्नलिखित परिच्छेदों को पढ़ें और अनुसरित प्रश्नों के उत्तर दें।

**परिच्छेद-1**

लाइम रोग (Lyme Disease) जो कि हिरण के शरीर में पाए जाने वाली परजीवियों के द्वारा संचारित जीवाणुओं के कारण होता है। यह उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में यदा-कदा ही सामने आती थी, मगर हाल ही में अमेरिका के कुछ भागों में फिर से प्रबल हो गई है, जिसका कारण उपनगरों के विकास के साथ-साथ हिरणों की जनसंख्या में हुई वृद्धि एवं हिरणों के आवास स्थलों में मनोरंजक गतिविधियों का बढ़ना

है। इसी तरह 1950 के दशक में डेंगू रक्तस्रावी बुखार एशिया में एक महामारी बन गया, क्योंकि पारिस्थितिकीय परिवर्तनों के कारण डेंगू विषाणु का संचरण करने वाला मच्छर एडीज एजिप्टी भारी मात्रा में पैदा होने लगा। इस समय अमेरिका में डेंगू महामारी के लिये उपयुक्त अनुकूल परिस्थितियाँ बन गई हैं, क्योंकि एक अन्य मच्छर एडीज एल्बोपिक्टस असावधानीपूर्वक विस्तृत रूप से फैल गया है।

1. परिच्छेद के अनुसार 1950 के दशक में डेंगू रक्त स्रावी बुखार के प्रकोप का निम्नलिखित में से कौन-सा कारण था?
   (a) एशिया में एडीज एजिप्टी मच्छर का प्रवेश हुआ था।
   (b) एडीज एजिप्टी मच्छर की तादाद बढ़ गई थी।
   (c) एडीज एल्बोपिक्टस मच्छर डेंगू विषाणु से संक्रमित हो गया था।
   (d) जो लोग बचपन में सामान्य रूप से डेंगू विषाणु से प्रतिरोध प्राप्त कर लेते हैं, बड़ी उम्र में इससे संक्रमित नहीं होते।

**व्याख्या:** (b) परिच्छेद के अनुसार 1950 के दशक में डेंगू रक्तस्रावी बुखार एशिया में एक महामारी बन गया था, क्योंकि पारिस्थितिकीय परिवर्तनों के कारण डेंगू विषाणु का संचरण करने वाला मच्छर एडीज एजिप्टी भारी मात्रा में पैदा हुआ अर्थात् उसकी संख्या में वृद्धि हुई इस प्रकार विकल्प (b) सटीक उत्तर है, जबकि अन्य विकल्प इतने मजबूत तथा तार्किक नहीं है।

2. परिच्छेद से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अमेरिका के कुछ भागों में लाइम रोग प्रबल हो गया। उसके निम्नलिखित में से कौन-से कारण हैं?
   (a) अमेरिका में असावधानीपूर्वक लाइम रोग के जीवाणु का प्रवेश होना।
   (b) लाइम रोग के जीवाणुओं को खत्म करने में आधुनिक स्वच्छता पद्धति की अक्षमता।
   (c) लाइम रोग के जीवाणुओं में आनुवांशिक परिवर्तन, जो कि इन्हें और अधिक विषाक्त बना देती है।
   (d) हिरण परजीवियों के संपर्क में आने वाले मनुष्यों की संख्या में वृद्धि होना।

**व्याख्या:** (d) परिच्छेद के अनुसार प्रारंभिक में लाइम रोग के बढ़ने की वजह उपनगरों के विकास के साथ-साथ हिरणों की संख्या में वृद्धि होना तथा साथ ही बढ़ती जनसंख्या के लिये मनोरंजक स्थलों का निर्माण हिरणों के आवास स्थलों पर होना था। इस प्रकार विकल्प (d) प्रत्यक्ष तौर पर उत्तर को संतुष्ट करता है। इसलिये विकल्प (d) सही उत्तर है।

3. परिच्छेद में दी गई जानकारी के आधार पर एडीज एल्बोपिक्टस मच्छर के बारे में निम्नलिखित में से कौन-से निष्कर्ष तर्कपूर्ण माने जा सकते हैं?
   (a) यह मूल रूप से अमेरिका में पाया जाता है।
   (b) यह केवल एशिया में फैल सकता है।
   (c) यह डेंगू विषाणु का संचरण करता है।
   (d) 1950 के दशक में इसके कारण डेंगू रक्तस्रावी बुखार की महामारी फैली।

**व्याख्या:** (c) परिच्छेद के अनुसार एल्बोपिक्टस मच्छर के मूल स्थान के बारे में कोई उल्लेख नहीं है। इस प्रकार विकल्प (a) सही तर्क नहीं है। परिच्छेद में एशिया में एडीज एजिप्टी मच्छर के फैलने की संभावना व्यक्त की गई है। इसलिये विकल्प (b) भी मजबूत तर्क नहीं है, जबकि 1950 के दशक में डेंगू रक्त-स्रावी बुखार फैलने का कारण एडीज एजिप्टी मच्छर था, न कि एडीज एल्बोपिक्टस, इसलिये विकल्प (d) भी गलत है। इसलिये विकल्प (c) के सही होने की पूर्ण संभावना है, क्योंकि परिच्छेद के अंत में उल्लेख है कि अमेरिका में डेंगू विषाणु के संचरण की परिस्थितियाँ बन गई हैं क्योंकि वहाँ एडीज एल्बोपिक्टस विस्तृत रूप में फैल चुका है। अत: विकल्प (c) एक मजबूत तर्क है।

4. निम्नलिखित में से कौन, यदि सत्य हो तो अमेरिका में लाइम रोग के प्रादुर्भाव के कारणों के बारे में लेखक के कथन को और अधिक मजबूती देगा?
   (a) बीसवीं शताब्दी के मध्य की अपेक्षा उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हिरणों की संख्या कम थी।
   (b) उन्नीसवीं सदी के अंत तक बाह्य मनोरंजन में रुचि विकसित होने लगी।
   (c) अभी हाल के वर्षों में उपनगरों की वृद्धि बंद हो गई है।
   (d) बाह्य मनोरंजन उत्साही (समर्थक) लाइम बीमारी से अपनी रक्षा करने के लिये नियमित रूप से कदम उठाते हैं।

**व्याख्या:** (a) परिच्छेद के प्रारंभ में उल्लेख किया गया है कि हाल ही में हिरणों की संख्या बढ़ गई है अर्थात् 19वीं शताब्दी से अब संख्या ज्यादा है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि विकल्प (a) मजबूत तर्क है।

**परिच्छेद-2**

भौतिकशास्त्री हमेशा कुछ सार्वभौमिक नियमों अथवा सिद्धांतों या कुछ आधारभूत अनुप्रयोग की तलाश में रहते हैं। रसायन विज्ञान में भी हम यही सब करते हैं, हम सिद्धांतों को प्रमाणित करते हैं। इसके अतिरिक्त रसायन विज्ञान में कुछ ऐसा होता है, जिसे हम रासायनिक अंतर्ज्ञान कहते हैं। लोग

भौतिक अंतर्ज्ञान के बारे में उतनी चर्चा नहीं करते, जितनी कि रासायनिक अंतर्ज्ञान के बारे में। एक अजीब सी सोच बन जाती है कि कुछ तो होगा, लेकिन क्यों और कैसे होगा, इन बातों पर कोई जवाब नहीं होता; ऐसे ही एक नए पदार्थ का निर्माण होगा और एक नई प्रक्रिया अपनाई जाएगी आदि।

1. निम्नलिखित में से कौन-सा एक भौतिक शास्त्रियों और रसायन शास्त्रियों में अंतर करता है?
   (a) भौतिक शास्त्री नियमों एवं सिद्धांत के तहत कार्य करते हैं, जबकि रसायन शास्त्री अंतर्ज्ञान के तहत भी कार्य करते हैं।
   (b) भौतिक विज्ञान के विपरीत अंतर्ज्ञान की प्रभावकारिता रसायन विज्ञान से अधिक प्रचलित है।
   (c) भौतिक विज्ञान में भौतिक अंतर्ज्ञान जैसी कोई अवधारणा नहीं है, जबकि रसायन विज्ञान में रसायनिक अंतर्ज्ञान होता है।
   (d) भौतिक शास्त्री अधिकांशत: सिद्धांत और नियमों पर निर्भर रहते हैं, जबकि रसायन शास्त्री अधिकांशत: अंतर्ज्ञान पर निर्भर रहते हैं।

**व्याख्या:** (b) परिच्छेद में इस बात का उल्लेख किया गया है कि 'लोग भौतिक अंतर्ज्ञान के बारे में उतनी चर्चा नहीं करते, जितनी कि रासायनिक अंतर्ज्ञान के बारे में' इसलिये हम कह सकते हैं कि अंतर्ज्ञान भौतिक शास्त्री एवं रसायन शास्त्री दोनों में ही होता है। लेकिन रसायन विज्ञान में यह अधिक प्रभावी तरीके से प्रचलित है। इस प्रकार (b) ही सही विकल्प है।

2. उपर्युक्त परिच्छेद की शैली किस प्रकार की है?
   (a) तुलनात्मक शैली (b) आलोचनात्मक शैली
   (c) व्याख्यात्मक शैली (d) विवरणात्मक शैली

**व्याख्या:** (a) उपर्युक्त परिच्छेद में भौतिक शास्त्र तथा रसायन शास्त्र के सिद्धांतों की तुलना की गई है। अत: प्रयुक्त शैली तुलनात्मक शैली है। इस प्रकार (a) सही उत्तर है।

## दर्शन

निम्नलिखित परिच्छेदों को पढ़ें और अनुसरित प्रश्नों के उत्तर दें।

### परिच्छेद-1

नऐ विचार न केवल ज्ञान की सीमाओं को विस्तार देने अथवा अन्वेषण तथा आविष्कार के लिये आवश्यक होते हैं, बल्कि वे वस्तुओं और प्रक्रियाओं में सुधार लाने, व्यवसाय को बढ़ाने, कार्य कुशलता में वृद्धि, समस्याओं का उपचार ढूढ़ँने तथा संक्षेप में कहें कि सभी के जीवन को सरल तथा खुशहाल बनाने के लिये आवश्यक होते हैं। नऐ विचारों की खोज के लिये पहला कदम है, हाथ में ली गई समस्या के समाधान के लिये भरपूर कोशिश करना। रुचि वह पेट्रोल होती है, जो मस्तिष्क रूपी इंजन को शक्ति देती है। इस प्रेरक ईंधन के बिना शरीर और मस्तिष्क की शक्तियाँ अधिकतर निष्क्रिय और अविकसित रहेंगी। रुचि, मस्तिष्क के तीन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य का आधार है। ये कार्य हैं- एकाग्रता, स्मरण शक्ति तथा कल्पना अथवा मौलिकता भावनात्मक प्रेरणा के रूप में रुचि किसी कार्य को करने के लिये आवश्यक ऊर्जा संचरित करती है तथा कठिनाइयों और विफलताओं के बावजूद उस कार्य में रुचि बनाए रखती है।

1. परिच्छेद के अनुसार निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा विकल्प सही है।
   (a) एक औसत व्यक्ति के मस्तिष्क में विचार नहीं होते हैं।
   (b) नए विचार दुर्ग्रा अथवा विदेशी नहीं होते, लेकिन हमेशा तात्कालिक परिस्थिति में उपस्थित रहते हैं।
   (c) सिर्फ रुचि मात्र ही एक व्यक्ति से नई तकनीक एवं आविष्कारों के बारे में सोचने के योग्य बना सकती है।
   (d) (a), (b) और (c) तीनों सही है।

**व्याख्या:** (c) परिच्छेद के अनुसार अंतिम पंक्तियों में रुचि किसी कार्य को करने के लिये आवश्यक ऊर्जा संचरित करती है, जिससे कि एकाग्रता, स्मरण शक्ति एवं कल्पना अथवा मौलिकता को बढ़ावा मिलता है। जिससे नई तकनीक एवं आविष्कार उत्पन्न होता है। इस प्रकार विकल्प (c) सही है, जबकि विकल्प (a) तथा (b) परिच्छेद के संदर्भ में तर्कसंगतता नहीं रखते हैं। अत: (c) ही सही उत्तर है।

2. एक मनुष्य का मस्तिष्क नए विचारों को उत्पन्न करने में किस तरह उसकी मदद कर सकता है?
   (a) तीन महत्त्वपूर्ण कार्यों के द्वारा, जैसे एकाग्रता, स्मरण शक्ति तथा कल्पना।
   (b) समस्या से संबंधित सभी तथ्यों एवं आँकड़ों को याद करके।
   (c) समस्या का समाधान खोजने के लिये हृदय और आत्मा के साथ सामंजस्य बैठाकर।
   (d) ज्ञात नहीं किया जा सकता।

**व्याख्या:** (d) उपर्युक्त परिच्छेद में सिर्फ इतना कहा गया है कि रुचि मस्तिष्क के तीन कार्यों-एकाग्रता, स्मरण-शक्ति तथा कल्पना अथवा मौलिकता का आधार है। न कि मस्तिष्क मनुष्य की किस प्रकार के नए विचारों को उत्पन्न कराने में मदद करता है। इस बात का परिच्छेद में कहीं उल्लेख नहीं है। अत: विकल्प (d) सही उत्तर है।

3. परिच्छेद के अनुसार निम्नलिखित में मस्तिष्क का कार्य कौन-सा नहीं है?
   (a) एकाग्रता
   (b) दु:ख व्यक्त करना
   (c) स्मरण-शक्ति
   (d) कल्पना

**व्याख्या:** (b) परिच्छेद के अनुसार मस्तिष्क के तीन कार्य हैं- एकाग्रता, स्मरण-शक्ति तथा कल्पना अथवा मौलिकता। इस प्रकार विकल्प (a), (b) तथा (d) मस्तिष्क के कार्य हैं, अत: (b) सही उत्तर है।

**परिच्छेद-2**

'दर्शन' शब्द को मैं जिस रूप में समझता हूँ, वह धर्मशास्त्र तथा विज्ञान का कुछ मध्यवर्ती है। धर्मशास्त्र की तरह इसमें उन विषयों पर चिंतन निहित है, जिन पर अभी तक स्पष्ट ज्ञान प्राप्त करना संभव नहीं हुआ है। लेकिन विज्ञान की तरह, प्राधिकार की बजाए, मानवीय कारण के लिये अपील करता है, चाहे यह परंपरा हो या रहस्योद्घाटन। मैं दावे के साथ कहता हूँ कि सभी निश्चित ज्ञान, विज्ञान से संबंधित है, सभी मत जो सीमित ज्ञान से परे हैं, धर्मशास्त्र से संबंधित है। लेकिन धर्मशास्त्र और विज्ञान के बीच एक रिक्त भूमि है जो दोनों ओर से प्रहारों के लिये खुली है यही रिक्त भूमि दर्शन है। चिंतनशील मस्तिष्कों की अधिकांश रुचि के लगभग सभी सवाल ऐसे हैं। जिनका उत्तर विज्ञान नहीं दे सकता तथा धर्मशास्त्रियों के विश्वस्त उत्तर पिछली शताब्दियों की अपेक्षा अब ज्यादा विश्वासोत्पादक प्रतीत नहीं होते। क्या संसार बुद्धि और तत्त्व में बँट गया है और यदि ऐसा है तो बुद्धि क्या है। तत्त्व क्या है?

1. परिच्छेद के अनुसार 'दर्शन' की व्यक्तिनिष्ठ विशेषता क्या है?
   (a) नैतिक तथा वैज्ञानिक प्रश्नों के उत्तर देना।
   (b) चिंतनशील ज्ञान तथा निश्चित ज्ञान का मध्यम मार्ग
   (c) ऐसे प्रश्नों का उत्तर देना, जिनके उत्तर प्रयोगशाला में नहीं दिये जा सकते
   (d) (a), (b) और (c) तीनों

**व्याख्या:** (b) परिच्छेद के प्रारंभ में बताया गया है कि दर्शन धर्मशास्त्र तथा विज्ञान का मध्यवर्ती है। धर्मशास्त्र के अंतर्गत आकलन शामिल है, जबकि पूर्ण ज्ञान का संबंध विज्ञान से है। अत: विकल्प (b) सही है। दर्शन प्रश्नों का अध्ययन करता है, यदि उनका उत्तर न दिया जाए। इसलिये विकल्प (a) तथा (c) सही नहीं है।

2. परिच्छेद में कई प्रश्न उठाए गए हैं, हमें यह दिखाने के लिये कि-
   (a) हम लोग मनुष्य के रूप में परिपूर्णता से काफी दूर हैं।
   (b) धर्मशास्त्र तथा विज्ञान परिपूर्ण नहीं है, लेकिन दर्शन के साथ ऐसा नहीं है।
   (c) धर्मशास्त्र तथा विज्ञान की सीमाएँ
   (d) धर्मशास्त्र तथा विज्ञान दोनों ज्ञान की तलाश करते हैं, लेकिन यह दर्शन ही है, जो कई अनुत्तरित प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास करता है।

**व्याख्या:** (d) परिच्छेद में प्रश्न इसलिये उठाए जाते हैं कि इन प्रश्नों का दर्शन के ज्ञान के माध्यम से अध्ययन किया जा सकता है। इस प्रकार विकल्प (d) सही है, जबकि अन्य विकल्प तर्क संगत उत्तर नहीं देते।

3. परिच्छेद का लेखक सर्वाधिक प्रतीत होता है, एक :
   (a) दार्शनिक (b) विश्लेषक
   (c) अकादमिक (d) आध्यात्मवादी

**व्याख्या:** (a) केवल विकल्प (a) ही पूछे गय प्रश्न का उत्तर देता है, क्योंकि पूरे परिच्छेद की शैली दार्शनिक है। अत: (a) ही सही उत्तर है।

## विविध

निम्नलिखित परिच्छेद को पढ़ें और अनुसरित प्रश्नों के उत्तर दें-

राष्ट्रों के बीच व्यापार एकीकरण, जो लोक नीति से ज्यादा तकनीकी विकास से संचालित होता है, का समग्र प्रभाव उच्च एवं बढ़ती हुई उत्पादकता वालों को पुरस्कृत करने में है। वास्तव में हाल के अनुभव दर्शाते हैं कि औद्योगिक अर्थव्यवस्थाओं में भी ऐसी लोक नीति सफल नहीं हो सकती है, जो प्रतिस्पर्द्धी उत्पादकता से कम स्तर वाले रोजगार के संरक्षण का प्रयास करती है और हालाँकि ऐसा एक सीमा से अधिक नहीं होता है, लेकिन त्वरित प्रौद्योगिकीय परिवर्तन के आलोक में यह अस्थाई एवं महँगा होता है। उत्पादकता पर इस तरह के सीमा पारीय व्यापार एकीकरण में व्युत्पन्न प्रभावों के कुछ सकारात्मक परिणाम होते हैं। उदाहरण के लिये उपभोक्ताओं के लिये वस्तुओं की कीमत एवं गुणवत्ता मुख्यत: संसार के सर्वाधिक कुशल उत्पादकों द्वारा निर्धारित होती है। व्यापार एकीकरण से प्रेषित उत्पादकता वृद्धि जीवन-स्तर के साथ-साथ जीवन की गुणवत्ता पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

1. परिच्छेद के आलोक में जहाँ तक लोक नीति का प्रश्न है तो परिच्छेद का मुख्य संदेश क्या है?
   (a) एक अति संरक्षणवादी लोक नीति बहुत लंबे समय तक चलने वाली नहीं है।
   (b) उत्पादकता को लेकर बनाई गई लोक नीति को प्रौद्योगिकीय विकास के कारकों को नजरअंदाज नहीं करना चाहिये।
   (c) लोकनीति एक आभासी कल्पना है, जिसका अनुसरण करना आसान नहीं है।
   (d) इनमें से कोई नहीं

**व्याख्या:** (b) परिच्छेद के अनुसार वैसी लोक नीति जो अपेक्षाकृत कम प्रतिस्पर्द्धी उत्पादक रोजगार के संरक्षण का प्रयास करती है, वह या तो सफल नहीं हो सकती या अस्थाई होती है। अत: परिच्छेद लोकनीति के प्रकार के संदर्भ में अत्यधिक विशिष्ट है और किसी भी अन्य लोक नीति के रूप में सामान्य नहीं है। अत: विकल्प (a) गलत है और विकल्प (b) को निष्कर्ष के रूप में प्राप्त किया जा सकता है। अत: (b) सही उत्तर है।

2. राष्ट्रों के मध्य 'व्यापार एकीकरण' निर्भर होना चाहिये –
   (a) आपसी सामंजस्य पर
   (b) प्रौद्योगिकीय विकास पर
   (c) संसाधनों के आदान-प्रदान पर
   (d) उत्पादकता वृद्धि से प्राप्त लाभ पर

**व्याख्या:** (d) परिच्छेद के अनुसार, उत्पादकता पर सीमा पारीय व्यापार एकीकरण प्रेरित दबावों के कुछ अनपेक्षित सकारात्मक प्रभाव हैं। अत: (d) सही विकल्प है।

## परिच्छेद से संबंधित कुछ जरूरी बातें

वैसे तो परिच्छेद अनिश्चित प्रकृति के होते हैं, कोई इसे निश्चित नियम के रूप में नहीं ले सकता है। किंतु फिर भी परीक्षार्थियों के लिये यहाँ महत्त्वपूर्ण सुझाव दिये जा रहे हैं, जो कि उनकी परिच्छेद से संबंधित समस्याओं को आसान बना सकते हैं। ऐसे सुझाव निम्नलिखित हैं –

1. परीक्षार्थियों को सुझाव है कि अध्ययन का दायरा बढ़ाएँ अर्थात् पाठ्यक्रम से इतर किसी राष्ट्रीय समाचार-पत्र जैसे कि दैनिक जागरण, जनसत्ता, भास्कर इत्यादि तथा समसामयिकी पत्रिका जैसे कि दृष्टि करेंट अफेयर टुडे का संपादकीय जरूर पढ़ें और उसके भाव को समझें।
2. संपादकीय को पढ़ते समय विश्लेषणात्मक व आलोचनात्मक क्षमता को बढ़ावा दें।
3. परिच्छेद को पढ़ते समय किसी जटिल शब्द या पंक्ति के आने पर उसका अंग्रेजी भावानुवाद जरूर देखें। ध्यान रहे कि भावानुवाद तथा भाषानुवाद दोनों अलग-अलग हो सकता है।
4. परिच्छेद को पढ़ते समय समझने की कोशिश करें, न कि याद करने की, क्योंकि बोधगम्यता समझ का परीक्षण है, न कि स्मरण का।
5. जीवनी पुस्तकों, आलेखों, मंत्रालयों के जर्नल, प्रकाशन विभाग की पुस्तकों, अच्छे साहित्य आदि को पढ़ना अपने स्वभाव में लाएँ।
6. परिच्छेद को एकाग्रता के साथ सावधानीपूर्वक समझते हुए पढ़ें, न कि रामायण या हनुमान चालीसा की तरह। कोशिश करें कि परिच्छेद एक बार में ही पढ़ना पड़े।
7. परिच्छेद में प्रयुक्त विशेष शब्दों पर विशेष ध्यान दें, क्योंकि ज्यादातर प्रश्न की प्रकृति यही निर्धारित करते हैं।
8. परीक्षा की प्रकृति पर आधारित समान परिच्छेदों को हल करने का निरंतर अभ्यास करें।
9. परिच्छेद का प्रथम भाग, जो कि विषय-वस्तु के परिचय पर आधारित तथा अंतिम भाग निष्कर्ष पर आधारित होता है। अत: इन पर विशेष ध्यान दें।
10. सामान्य अध्ययन या किसी विषय आधारित परिच्छेद को समझने में अपने विषय संबंधी ज्ञान का समावेश न करें। सामान्यत: यह गलत विकल्प का चयन कराने में सहायक होता है अर्थात् विकल्प का चयन सिर्फ परिच्छेद पर आधारित होना चाहिये।
11. परिच्छेद को पढ़ने के बाद उसे अपनी भाषा में समझने का प्रयास करें।
12. सही विकल्प का चयन पहले गलत विकल्पों को छाँटकर भी किया जा सकता है।

# अध्याय 2

# राजनीतिक
# (Political)

**परिच्छेद–1**

सामान्य अर्थों में लोकतंत्र को सरकार के एक प्रकार के रूप में समझा जाता है, जिसका संबंध लोकप्रिय संप्रभुता से है। इसे अनिवार्य रूप से लोगों द्वारा शासन माना जाता है, जो राजतंत्र अथवा कुलीनतंत्र का विरोधाभासी है। लोकतांत्रिक व्यवस्था की एक प्रमुख विशेषता अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और समाज के विभिन्न तबकों को अपनी बात रखने के लिये दी गई आजादी है। एक लोकतांत्रिक व्यवस्था अपनी अधिकतम क्षमता से तभी कार्य कर सकती है, जब आम जनता की व्यापक भागीदारी हो, जो तब तक संभव नहीं है जब तक कि लोगों को विभिन्न मुद्दों से अवगत नहीं कराया जाए। विश्वसनीय सूचना संसाधन किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिये महत्त्वपूर्ण होते हैं और यहीं से मीडिया की भूमिका शुरू होती है।

1. मीडिया लोकतंत्र की जड़ों को किस प्रकार मजबूत कर सकता है?
   - (a) सरकार के रोजमर्रा के कार्यों में प्रत्यक्ष भागीदारी करके
   - (b) लोगों को उनके लोकतांत्रिक कर्तव्यों के बारे में जागरूक बनाकर
   - (c) लोगों को विभिन्न लोकतांत्रिक मुद्दों के बारे में अवगत कराकर
   - (d) लोगों को यह बताकर कि सरकार कैसे कार्य करती है और उनके क्या अधिकार हैं?
2. आम जनता की व्यापक भागीदारी किस व्यवस्था का अभिन्न अंग है?
   - (a) राजतंत्र
   - (b) कुलीनतंत्र
   - (c) लोकतंत्र
   - (d) इनमें से कोई नहीं

**परिच्छेद–2**

लोकतंत्र को आमतौर पर लोगों की, लोगों द्वारा एवं लोगों के लिये सरकार के रूप में परिभाषित किया जाता है। यह समानता, स्वतंत्रता और भाईचारे की भावना को बरकरार रखने पर लक्षित है। भारत एक लोकतांत्रिक देश अवश्य है, लेकिन दुर्भाग्य से भारतीय अभी तक लोकतांत्रिक नहीं हैं। भारत के लोगों को प्रत्येक पाँच वर्ष पर अपने प्रतिनिधि को चुनने का मौका प्रदान किया जाता है, जो उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति और उनकी परवाह करे। ज्यों ही चुनाव खत्म होते हैं, उनकी आशाओं का गला घोंट दिया जाता है। इस असफलता के पीछे का कारण लोकतंत्र की पूर्वापेक्षा की कमी है। एक सफल लोकतंत्र के लिये सबसे पहली शर्त वहाँ के लोगों की शिक्षा और राजनीतिक जागरूकता है। ईमानदारी व नेताओं की वचन-बद्धता, पूर्णरूपेण स्वतंत्र न्यायपालिका, उचित जाँच-पड़ताल जैसे कुछ दूसरे तथ्यों की चर्चा की जा सकती है। वास्तविकता यह है कि जब संपूर्ण लोकतंत्र की बात आती है तो अकेला राजनीतिक लोकतंत्र कुछ नहीं कर सकता। लोकतंत्र इस पर खरा नहीं उतरता। सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र भी इसके साथ चलते हैं। यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है कि उपलब्ध संसाधनों का अस्सी प्रतिशत हमारी बीस प्रतिशत आबादी द्वारा उपभोग किया जाता है। क्षेत्रवाद, सांप्रदायिकता एवं जातिवादिता जैसे राक्षसों ने माहौल बिगाड़ कर रख दिया है। समाज के वंचित वर्ग शुरुआत में शोषित किये जाते हैं और बाद में उन्हें नकार दिया जाता है। महिलाओं के सशक्तीकरण की बात भाषणों तक सीमित है। इन परिस्थितियों में लोकतंत्र की प्राप्ति संभव नहीं है। अगर आगे जरूरी कदम उठाए गए तो भविष्य में आशा जगती है, नहीं तो स्थिति और भी बुरी हो जाएगी।

3. भारतीय अभी तक लोकतांत्रिक क्यों नहीं हैं?
   - (a) वे सही प्रतिनिधि नहीं चुनते हैं।
   - (b) वे अपने अधिकार का गलत प्रयोग करते हैं।
   - (c) वे पर्याप्त शिक्षित नहीं हैं कि राजनीतिक विवादों को समझ सकें।
   - (d) वे उचित प्रक्रिया से अवगत नहीं हैं।
4. वाक्यांश के अनुसार, 'उनकी आशाओं का गला घोंट दिया जाता है' से क्या समझा जा सकता है?
   - (a) उनमें बिल्कुल भी आशाएँ नहीं हैं।
   - (b) उनकी आशाएँ बुरी तरह नकारी जाती हैं।
   - (c) उनकी आशाएँ पूरी होती हैं, लेकिन देरी से।
   - (d) अब उनमें आशाएँ नहीं हैं।
5. वर्तमान में आशा पूरी क्यों नहीं होती है?
   - (a) परिस्थितियाँ नियंत्रण से बाहर हैं।
   - (b) लोग कोई भी कदम उठाने को तैयार नहीं हैं।
   - (c) वर्तमान में यह स्थिति बन रही है, क्योंकि पूर्व में जरूरी कदम नहीं उठाए गए थे।
   - (d) महिलाओं का सशक्तीकरण सहज नहीं है।

अध्याय
3

# सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक (Social–Economic and Cultural)

## परिच्छेद–1

सभी आधुनिक समाजों में कानून का अस्तित्व है और प्रायः इसे वर्तमान सभ्य समाजों की आधारशिला माना जाता है, लेकिन ऐसा क्या है, जो कानून को अन्य सामाजिक नियमों से अलग करता है और किस अर्थ में कानून को अंतर्राष्ट्रीय या वैश्विक स्तर पर संचालित किया जाता है? घरेलू कानून के मामले में इसके विशिष्ट लक्षणों की पहचान करना आसान होता है। पहला, कानून सरकार द्वारा बनाया जाता है और इसलिये पूरे समाज पर लागू होता है। राज्य की इच्छा से निर्मित होने के कारण कानून को न केवल अन्य मानदंडों एवं सामाजिक नियमों पर वरीयता प्राप्त होती है बल्कि यह घरेलू कानूनों को एक सुनिश्चित राजनैतिक समाज के दायरे में रहते हुए सार्वभौमिक क्षेत्राधिकार प्रदान करता है। दूसरा, कानून सभी के लिये अनिवार्य होता है; नागरिकों को इस बात की अनुमति नहीं होती है कि वे किस कानून को मानें और किसकी उपेक्षा करें; क्योंकि कानून को नियंत्रण एवं दंड की एक व्यवस्था द्वारा समर्थन प्राप्त होता है। इसीलिये कानून को विधिक प्रणाली, मानदंडों एवं संस्थाओं के एक संकलन की आवश्यकता होती है, जिसके माध्यम से वैधानिक नियमों का निर्माण, व्याख्या एवं कार्यान्वयन किया जाता है। तीसरा, कानून का स्वरूप सार्वजनिक होता है और इस रूप में इसके अंतर्गत कूटबद्ध, प्रकाशित एवं मान्य नियम अंतर्निहित होते हैं। इन्हें एक औपचारिक और सामान्यतः सार्वजनिक, वैधानिक प्रक्रिया द्वारा प्राप्त किया जाता है। इसके अतिरिक्त कानून तोड़ने के लिये दिये जाने वाले दंड का पूर्वानुमान लगाया जा सकता है, जबकि मनमानी गिरफ्तारी अथवा कारावास यादृच्छिक या तानाशाही प्रकृति का होता है। चौथा, कानून जिन पर लागू होता है, उनके लिये बाध्यकारी माना जाता है, बेशक फिर कुछ कानूनों को गैर न्यायपूर्ण अथवा अनुचित ही क्यों न माना जाए। इसलिये, कानून को केवल प्रवर्तनीय आदेशों के एक संकलन से अधिक माना जाता है, इसमें नैतिक दावे भी अंतर्निहित होते हैं, जिनका तात्पर्य है कि विधिक नियमों का पालन किया जाना चाहिये।

1. परिच्छेद के संदर्भ में कानून को सामाजिक नियमों से अलग किस तरह माना जा सकता है?
   (a) किसी एक देश में बनाए गए कानून उसके प्रत्येक नागरिक पर लागू होते हैं, जबकि सामाजिक नियम एक समाज से दूसरे समाज में बदलते रहते हैं।
   (b) कानून समाज पर लागू होते हैं, जबकि सामाजिक नियम लागू नहीं होते हैं।
   (c) कानून राजनीतिक समाज के लिये स्वीकार्य होते हैं, जबकि सामाजिक नियम नहीं।
   (d) कानून उचित वैधानिक व्यवस्था के अनुरूप कार्य करते हैं, जबकि सामाजिक नियमों को किसी भी व्यवस्था की आवश्यकता नहीं होती है।
2. यदि राज्य द्वारा एक नया कानून प्रस्तावित है तो उस कानून को वैधता प्राप्त करने के लिये निम्नलिखित में से कौन-सी शर्त/शर्तें अनिवार्य है/हैं?
   (a) जनता की सहमति (b) वैधानिक समर्थन
   (c) सार्वभौमिक क्षेत्राधिकार (d) न्यायपूर्ण प्रकृति
3. किसी कानून में अंतर्निहित 'सार्वजनिक' गुणवत्ता से क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?
   (a) कानून सामान्यतः जनता द्वारा बनाए एवं प्रयोग किये जाते हैं?
   (b) कानून लिखित होता है और जनता सामान्यतः इसके क्रियान्वयन पक्ष से ही वाक़िफ होती है।
   (c) जनता को सामान्यतः इसके बारे में पता होता है कि कानून का उल्लंघन करने के पश्चात् या तो वे दंडित होंगे या नहीं।
   (d) लोगों को सामान्यतः यह पता होता है कि कानून के तहत मनमानी गिरफ्तारी संभव नहीं है।
4. चूँकि परिच्छेद में स्पष्ट रूप से 'अंतर्राष्ट्रीय कानून' की परिभाषा का उल्लेख नहीं किया गया है, लेकिन परिच्छेद में दी गई जानकारी के आधार पर इससे क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?
   (a) वे सभी देशों द्वारा स्वीकृत होने चाहिये।
   (b) उन्हें पर्याप्त कानूनी समर्थन प्राप्त होना चाहिये।
   (c) वे भिन्न-भिन्न देशों के अलग-अलग सामाजिक नियमों के अनुरूप होने चाहिये।
   (d) उपर्युक्त सभी

## परिच्छेद–2

''भारत में बौद्धिक संपदा अधिकारों की व्यवस्था में अंतर्निहित औचित्य अथवा इसका दार्शनिक आधार तीन मूल उद्देश्यों में सम्मिलित है। पहला, यह एक ओर उत्पादकों के तथा दूसरी ओर उपभोक्ताओं के हितों के बीच संतुलन साधना चाहता है अर्थात् उनके जो वैज्ञानिक ज्ञान अथवा नवाचार का

अध्याय
4

# पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण
# (Ecology and Environment)

### परिच्छेद–1

पारिस्थितिक तंत्र हमें बहुमूल्य नवीकरणीय संसाधन एवं सेवाएँ जैसे कि भोजन, रेशा, जल संग्रहण एवं बाढ़ नियंत्रण, निर्माण कार्य हेतु लकड़ी, वायु एवं जल से प्रदूषणकारी तत्त्वों को हटाने, कीट एवं बीमारी नियंत्रण तथा सुधार और जलवायवीय दशाएँ प्रदान करता है। कुछ हद तक इन वस्तुओं एवं सेवाओं को भी पर्यावरण प्रदूषण से खतरा होता है, इन्हें नागरिक प्रयासों, मानव निर्मित रसायनों और गैर-नवीकरणीय ऊर्जा की आपूर्ति द्वारा प्रतिस्थापित किया जाना चाहिये। पारिस्थितिक तंत्र पुनर्निर्माण, वैज्ञानिक खोज अथवा जंगलों या तट के किनारे चलने-फिरने की दृष्टि से बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण तो नहीं है, लेकिन फिर भी बहुमूल्य प्रकृति के अवसर उपलब्ध अवश्य कराता है।

वायु एवं जल प्रदूषण (उदाहरण के लिये औद्योगिक संयंत्र एवं मछली विहीन नदियों के आसपास के उजड़े हुए क्षेत्र) से पर्यावरण को होने वाले अत्यधिक नुकसान को कम करने में महत्त्वपूर्ण प्रगति हासिल हुई है। खतरनाक स्तर की संभावित आपदाओं जैसे वन क्षेत्र का कम होना, मुहानों पर विषाक्त सूक्ष्मजीवों से व्यापक रूप से फैलने वाली महामारियों, वन्य जीवन के पुनर्उत्पादन में विफलता, स्थायी जैव प्रदूषकों का पुनर्वितरण, महत्त्वपूर्ण आवासों का विनाश, विषाणु जनित संक्रामक तथा वैश्विक जलवायु परिवर्तन आदि को समझने, इन्हें नियंत्रित करने के संबंध में बहुत कुछ समझना बाकी है।

1. निम्नलिखित में से किसे परिच्छेद की विषयवस्तु माना जा सकता है?
   (a) पर्यावरणीय प्रदूषण पारिस्थितिक तंत्र की प्रभावोत्पादकता पर गंभीर सवाल खड़ा करता है।
   (b) मानवीय गतिविधियों ने पर्यावरण को किस प्रकार क्षति पहुँचाई है।
   (c) पर्यावरण का निम्नीकरण पारिस्थितिक तंत्र के अंतर्निहित गुणों को क्षीण कर देता है और इससे गंभीर पर्यावरणीय संकटों का खतरा मँडरा रहा है।
   (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं।
2. पारिस्थितिकी तल की विशिष्ट प्रकृति क्या है/हैं?
   (a) पारिस्थितिकी तंत्र स्वतः ही जलवायवीय निम्नीकरण से लड़ सकता है
   (b) मानवीय गतिविधियाँ हमारे पारिस्थितिक तंत्र को नुकसान भी पहुँचा सकती है और बचा भी सकती है।
   (c) बहुमूल्य प्रकृति की उपलब्धता।
   (d) उपर्युक्त सभी
3. पारिस्थितिकी तंत्र की संभावित आपदाओं में क्या शामिल नहीं है?
   (a) महत्त्वपूर्ण आवासों का विनाश
   (b) वैश्विक जलवायु परिवर्तन
   (c) परमाणु प्रसार का खतरा
   (d) वन क्षेत्र का कम होना।

### परिच्छेद–2

मैं हमेशा दुनियाभर में आने वाली आपदाओं के बारे में सोचता हूँ, जिनकी वजह से लोग मरते हैं, घायल होते हैं और इनके कारण हुए विनाश की वजह से बड़े पैमाने पर लोग विस्थापित होते हैं, साथ ही इसके दीर्घकालिक प्रभाव भी सामने आते हैं। मेरे दिमाग में हमेशा इस बात को लेकर आश्चर्य होता है कि यह सब क्यों होता है? क्या इसके प्रभावों को कम करने का कोई तरीका है या फिर यह पूरी तरह से एक प्राकृतिक घटना है और इस कारण इसे रोक पाना मनुष्य की क्षमता से बाहर की बात है, इसलिये हम सब कुछ भगवान भरोसे छोड़कर भाग्यवादी बन जाएँ? वर्षों से भिन्न-भिन्न लोगों ने आपदाओं को भिन्न-भिन्न तरीकों से परिभाषित किया एवं समझा है और इस बात पर व्यापक सहमति भी व्यक्त की गई है कि खतरे (Hazardous) प्राकृतिक हैं, लेकिन आपदाएँ (Disasters) गैर-प्राकृतिक होती हैं। अब मैं आपदा के विभिन्न पक्षों को उजागर करना चाहूँगा और इस बात को स्पष्ट करूँगा कि किस प्रकार एक प्राकृतिक खतरा, आपदा में रूपांतरित हो जाता है? आपदा के प्रभावों का अनुमान कैसे लगाया जाता है? इसके विकासीय निहितार्थ क्या हैं और हमें आपदा को कैसे समझना चाहिये तथा आपदा एवं उसके प्रभावों से अलग-अलग तरीके से किस प्रकार निपटा जाना चाहिये।

4. "प्राकृतिक खतरे एवं आपदा दो अलग-अलग घटनाएँ हैं।" इसको किस तरह स्पष्ट किया जा सकता है?
   (a) पहले प्राकृतिक खतरा आता है, उसके बाद आपदा आती है।
   (b) प्राकृतिक खतरे ईश्वर की देन हैं, जबकि आपदाएँ मानव जनित होती हैं।
   (c) प्राकृतिक खतरे प्राकृतिक घटना हैं, जबकि मानवीय गतिविधियाँ इन्हें आपदाओं में बदल देती हैं।
   (d) (a), (b) और (c) सभी सही हैं।

अध्याय
5

# विज्ञान और प्रौद्योगिकी
# (Science and Technology)

**परिच्छेद–1**

भारत में कई फसलों (ट्रांसजेनिक) में जैव प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जा रहा है। इस दिशा में किये गए प्रमुख प्रयास कपास की फसल को कीट-रोधी बनाने पर केंद्रित रहे हैं। अधिकांश पाठक कपास की खेती करने वाले किसानों द्वारा हाल ही में की गई आत्महत्याओं से अवश्य ही अवगत होंगे। हम आशा करते हैं कि हमें कीट-रोधी ट्रांसजेनिक कपास के बीज बनाने में सफलता मिल जाएगी। जब तक हमें इस कार्य में व्यावसायिक स्तर पर सफलता नहीं मिल जाती, हम इस बात को लेकर आश्वस्त नहीं हो सकते कि हम बड़े स्तर पर उपयोग के लिये इसकी पर्याप्त आपूर्ति कर सकते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि इस तरह के शोध कार्यों को बढ़ावा दिया जाना चाहिये, लेकिन हमें इसके बाकी के पहलू भी देखने चाहिये। भारत में फसल जैव प्रौद्योगिकी की दिशा में किये जा रहे शोध कार्यों के लिये आवश्यक है कि ये हमारी कुछ महत्त्वपूर्ण फसलों, विशेषकर वे जो खाद्य सुरक्षा से संबंधित हैं, पर केंद्रित हो।

1. परिच्छेद के संदर्भ में 'ट्रांसजेनिक फसलों' के संबंध में लेखक का क्या मानना है?
   (a) वह बड़े स्तर पर ट्रांसजेनिक फसलों के उपयोग का विरोध करता है।
   (b) उसे लगता है कि परंपरागत कृषि तकनीकें जैव प्रौद्योगिकी की अपेक्षा अधिक कार्यकुशल हैं।
   (c) उसे लगता है कि भारत के खाद्य सुरक्षा कार्यक्रम पर ट्रांसजेनिक फसलों का व्यापक प्रभाव हो सकता है।
   (d) वह ट्रांसजेनिक फसलों की व्यावहारिकता को लेकर पूर्णतः आश्वस्त नहीं है।
2. भारत में किसानों की आत्महत्या का प्रमुख कारण है-
   (a) ट्रांसजैनिक फसलों को बढ़ावा
   (b) कपास की पैदावार में कमी
   (c) जैव प्रोद्योगिकी को बढ़ावा
   (d) इनमें से कोई नहीं

**परिच्छेद–2**

टेलीपैथी कैसे काम करती है? एक सिद्धांत के अनुसार जो टेलीपैथी को समझाने के लिये सुझाया गया है, हमारे मस्तिष्क केवल चेतन स्तर पर ही अलग-अलग एवं परस्पर पृथक् होते हैं, लेकिन अचेतन के गहरे स्तर पर हम निरंतर एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं और इसी स्तर पर टेलीपैथी कार्य करती है। एक आदर्श एवं कुछ-कुछ नाटकीय उदाहरण दिया जा सकता है: झील के किनारे बैठी एक महिला, एक आदमी के स्वरूप को झील की ओर दौड़ता हुआ देखती है, जो उस झील में कूद जाता है। कुछ दिनों बाद एक आदमी उसी झील में कूदकर आत्महत्या कर लेता है। संभवतः इस आभास की व्याख्या यह है कि जब वह आदमी आत्महत्या का विचार कर रहा था तब उसका विचार उस महिला के मस्तिष्क के जरिये टेलीपैथी प्रक्रिया से दृश्य रूप में प्रकल्पित हो गया था।

3. परिच्छेद के अनुसार निम्नलिखित में कौन-सा कथन सही है?
   (a) टेलीपैथी एक आनुभविक विहीन परिघटना है।
   (b) कभी-कभी टेलीपैथी के प्रकल्पन और ग्रहणकर्ता द्वारा उस विचार के प्रकटीकरण के मध्य विलंब होता है।
   (c) अवचेतन के गहरे स्तर पर हम निरंतर एक-दूसरे को प्रभावित नहीं कर सकते।
   (d) उपर्युक्त तीनों सही हैं।
4. परिच्छेद के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में कौन-सा कथन सत्य है?
   (a) हमारा मस्तिष्क चेतनता के सभी स्तरों पर अलग-अलग होता है।
   (b) चेतनता के गहरे स्तर पर हम निरंतर एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।
   (c) सिर्फ चेतनता के गहरे स्तर पर टेलीपैथी कार्य करती है।
   (d) इनमें से कोई नहीं
5. परिच्छेद के अनुसार टेलीपैथी आधारित प्रकटपन के संदर्भ में कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?
   (a) भूतकाल, वर्तमान पर प्रकल्पित किया जा सकता है।
   (b) वर्तमान-वर्तमान पर प्रकल्पित किया जा सकता है।
   (c) भविष्य, वर्तमान पर प्रकल्पित किया जा सकता है।
   (d) विकल्प (a) और (b) दोनों।
6. परिच्छेद के संदर्भ में निम्नलिखित विकल्पों में कौन-सा कथन सत्य है?
   (a) टेलीपैथी आधारित प्रकल्पन स्वप्न की प्रक्रिया द्वारा परिचालित होती है।
   (b) टेलिपैथी आधारित प्रकल्पन के कुछ रूप तभी स्पष्ट होते हैं, जब मस्तिष्क भौतिक संसार पर ध्यान देना बंद कर देता है।

अध्याय
6

# दर्शन
# (Philosophy)

**परिच्छेद-1**

दुविधा क्या है? प्रथम दृष्टया यह स्पष्ट नहीं होता है कि 'नैतिक दुविधा' शब्दावली एक ही तरह की कुछ ऐसी परिस्थितियों की पहचान करती है, जिनकी विशेषताएँ एक समान होती हैं। अब तक हम एक नकारात्मक कसौटी अपनाते आए हैं। नैतिक दुविधा महज़ एक कठिन निर्णय से भिन्न है। दुविधा की स्थिति में कठिनाई परिस्थिति की वास्तविक प्रकृति से उत्पन्न होती है और ज्ञान अथवा नैतिक ज्ञान की कमी मात्र के चलते हमें इसका सामना करना पड़ता है।

यह सत्य है कि आम बोलचाल में हमारा रुझान दुविधा शब्दावली को किसी भी ऐसे निर्णय के लिये प्रयोग करने के प्रति होता है, जहाँ हम इस बात को लेकर आश्वस्त नहीं होते हैं कि दो विकल्पों में से किसका चुनाव करना है; दूसरे शब्दों में यह 'कठिन निर्णय' का समानार्थी प्रतीत होती है, जबकि जैसा कि हम देखते हैं कि किसी एक व्यक्ति के लिये जो जटिल है, वही किसी अन्य व्यक्ति, जिसका नैतिक बोध अधिक मजबूत है, के लिये अधिक स्पष्ट एवं आसान हो सकता है। यदि कोई व्यक्ति किसी कठिन निर्णय को 'दुविधा' मानने पर बल देता है तो ऐसे लोगों को दुविधा की विविधता के लिये एक ऐसे शब्द की आवश्यकता होती है, जो उस व्यक्ति के अपने दिमाग की उपज न हो, बल्कि समाज में किसी वास्तविक स्थिति के लिये व्यापक रूप से प्रयोग किया जाने वाला शब्द हो।

1. नैतिक दुविधा का सामना किसकी कमी के कारण करना पड़ता है?
   (a) ज्ञान की कमी के कारण।
   (b) नैतिक ज्ञान की कमी के कारण।
   (c) नकारात्मक कसौटी के कारण।
   (d) ज्ञान तथा नैतिक ज्ञान दोनों की कमी के कारण।
2. निम्नलिखित में से कौन एक नैतिक दुविधा और कठिन निर्णय के मध्य भेद कर सकता है?
   (a) नैतिक दुविधा परिस्थितिजन्य स्थिति का परिणाम होती है, जबकि दो विकल्पों में से चयन की अनिश्चितता के परिणामस्वरूप कठिन निर्णय उत्पन्न होता है।
   (b) प्रत्येक कठिन निर्णय एक नैतिक दुविधा होती है, जबकि प्रत्येक नैतिक दुविधा, कठिन निर्णय नहीं होता है।
   (c) नैतिक दुविधा की स्थिति में किसी व्यक्ति का झुकाव अन्य की अपेक्षा एक विशेष निर्णय के प्रति होता है, जबकि कठिन निर्णय के संबंध में ऐसा नहीं होता है।
   (d) नैतिक दुविधा की स्थिति में हम परिणामों के प्रति आश्वस्त होते हैं, जबकि कठिन निर्णय की स्थिति में ऐसा नहीं होता है।
3. निम्नलिखित में से कौन-से कथन दुविधा के संबंध में सही हैं?
   (a) दुविधा जानकारी के अभाव में उत्पन्न होती है।
   (b) जो किसी व्यक्ति के लिये दुविधा है, वही किसी अन्य व्यक्ति के लिये बेतुका एवं आश्चर्यजनक रूप से बहुत ही आसान हो सकता है।
   (c) यदि किसी समस्या के दो समाधान हैं और उनमें से एक अधिक लाभप्रद है तो वह दुविधा है।
   (d) विकल्प (b) और (c) दोनों।
4. इस परिच्छेद का संबंध निम्नलिखित में से किसके साथ होने की संभावना सर्वाधिक है?
   (a) चिकित्सा विज्ञान का जर्नल
   (b) दर्शनशास्त्र का जर्नल
   (c) मनोविज्ञान का जर्नल
   (d) निर्णयन संबंधी पुस्तक

**परिच्छेद-2**

1990 के दशक के बाद से कई लोकप्रिय पुस्तकें एवं मनोवैज्ञानिक अध्ययन ऐसे रहे हैं, जिन्होंने 'बौद्धिकता' के अर्थ को लेकर हमारी सामान्य समझ में बौद्धिक जागरूकता एवं योग्यता को शामिल करने की मांग की है। इस विचार को डेनियल गोलेमैन की 1996 में आई सर्वाधिक बिकने वाली पुस्तक 'इमोशनल इंटेलीजेंस' द्वारा लोकप्रिय बनाया गया। गोलेमैन का तर्क था कि लोगों के जीवन अवसरों को निर्धारित करने में भावनात्मक बौद्धिकता कम से कम बुद्धिलब्धि जितनी महत्त्वपूर्ण तो हो ही सकती है। भावनात्मक बौद्धिकता का संबंध इन बातों से है कि लोग अपनी भावनाओं का प्रयोग किस तरह करते हैं, यह भावनाओं को समझने की क्षमता, और साथ ही जब भावनाएँ उत्पन्न होती हैं तो उनका मूल्यांकन करने और स्वयं में और दूसरों में उनको व्यवस्थित करने पर भी विचार करती है। बुद्धिलब्धि विचारकों के विपरीत, हालाँकि भावनात्मक बौद्धिकता के गुण वंशानुगत नहीं होते। अतः बच्चों को जितना इसके बारे में सिखाया जा सकता है, उतनी ही

अध्याय
7

# विविध
# (Miscellaneous)

**परिच्छेद-1**

"अर्थशास्त्री, नीतिशास्त्री और व्यापारी हमें विश्वास दिलाने का प्रयास करते हैं कि ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है, लेकिन उनका प्रमाण कमज़ोर है। हम ऐसे आँकड़ों को प्राप्त करने की आशा करते हैं, जो उनके सिद्धांतों को समर्थन दें और संभवत: व्यापार-व्यवहार के उच्च मानकों को प्रोत्साहित करें। हमारे लिये आश्चर्य की बात यह है कि हमारे पसंदीदा सिद्धांत टिके रहने में असफल हैं। हम देखते हैं कि छल-कपट लाभ पहुँचा सकता है। सत्य बोलने एवं अपना वचन निभाने का कोई ठोस आर्थिक कारण नहीं है। व्यवहार-जगत में छल-कपट के लिये दंड न तो तुरंत मिलता है, न ही सुनिश्चित है।

सही मायने में ईमानदारी, प्राथमिक रूप से एक नैतिक चयन है। व्यापारी लोग अपने आप से कहते हैं कि लंबे समय में वे सही करके ही अच्छा करेंगे, लेकिन इस धारणा के लिये तथ्यात्मक एवं तार्किक आधार बहुत कम है। गहरे मूल्यों के बिना, गलत के स्थान पर सही के पक्ष में मूलभूत प्राथमिकता के बिना अपने प्रति भ्रामक धारणाओं पर टिका विश्वास प्रलोभनों की स्थिति में टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा। हममें से अधिकांश लोग सद्गुणों को इसलिये चुनते हैं, क्योंकि हम खुद में विश्वास रखना चाहते हैं और दूसरों का सम्मान और विश्वास हासिल करना चाहते हैं।

और इसके लिये हमें प्रसन्न होना चाहिये। हम एक ऐसी व्यवस्था पर गर्व कर सकते हैं, जिसमें लोग इसलिये ईमानदार हैं, क्योंकि वे ऐसा बनना चाहते हैं, न कि इसलिये कि उन्हें ऐसा बनना पड़ता है। भौतिक जगत में भी नैतिकता पर आधारित विश्वास अत्यधिक लाभ प्रदान करता है। यह हमें कई महान और उत्साहजनक उद्यमों में शामिल होने की अनुमति देता है, जिन्हें केवल आर्थिक उत्प्रेरकों पर निर्भर रहकर हम कभी भी आरंभ नहीं कर सकते थे।

1. परिच्छेद के अनुसार अर्थशास्त्री और नीतिशास्त्री हमें क्या विश्वास दिलाना चाहते हैं?
   (a) व्यापारियों को हर समय ईमानदार होना चाहिये।
   (b) व्यापारी हर समय ईमानदार नहीं हो सकते हैं।
   (c) व्यापारी कभी-कभी बेईमान हो जाते हैं।
   (d) व्यापारी केवल कभी-कभी ईमानदार होते हैं।
2. परिच्छेद के लेखक के अनुसार, निम्नलिखित में से व्यापार में ईमानदार होने का कारण क्या है?
   (a) यह कोई तात्कालिक लाभ नहीं देता है।
   (b) यह दीर्घकालिक लाभ देता है।
   (c) यह दूसरों के मन में आपके प्रति सम्मान लाता है।
   (d) यह दूसरों को आपका सम्मान नहीं करने देता है।
3. लेखक क्यों कहता है कि कोई भी वर्तमान स्थिति पर गर्व कर सकता है?
   (a) लोग आत्म-सम्मानी होते हैं।
   (b) लोग सम्मान-खोजी होते हैं।
   (c) लोग नि:स्वार्थी होते हैं।
   (d) लोग बिना किसी मजबूरी के ईमानदार होते हैं।
4. अर्थशास्त्रियों के अनुसार व्यापारी लोग ईमानदार क्यों बने रहते हैं?
   (a) बेईमान व्यापारी अधिक धन अर्जित कर सकते हैं।
   (b) बेईमान व्यापारी लंबे समय में जाकर धन अर्जित कर पाते हैं।
   (c) बेईमान व्यापारी लंबे समय तक व्यापार में टिके नहीं रह सकते हैं।
   (d) बेईमान व्यापारियों पर हमेशा मुकदमा चलाया जाता है।

**परिच्छेद-2**

हाल के वर्षों में भूमंडलीकरण ने काफी हद तक लोगों का ध्यान आकर्षित किया है, क्योंकि सामाजिक वैज्ञानिकों, राजनीतिक पंडितों और सांस्कृतिक आलोचकों ने इस बात की व्याख्या करने की कोशिश की है कि किस तरह इसने हमारी दुनिया को बदल कर रख दिया है परंतु क्या यह वास्तव में नया है? जहाँ तक खोजकर्ताओं के पास लंबी दूरियाँ तय करने के साधन थे, उन्होंने अपने समुदाय की जानकारी से बाहर की वस्तुओं को जानने, समझने और उनसे लाभ प्राप्त करने की कोशिश की।

खोजों और औपनिवेशीकरण का महान काल इस बात का साक्षी है, हालाँकि इसमें और भी कई प्रेरणाएँ अंतर्निहित हैं। दुनिया के बारे में जानने, स्थानीय विधियों के असफल होने की स्थिति में जीवन-निर्वाह के बेहतर साधन तलाशने, प्रसिद्धि एवं भाग्य की खोज करने, जिस चीज का अभाव या कमी है, उसका व्यापार करने तथा देश को प्रसिद्धि दिलाने जैसे विभिन्न प्रेरक कारकों ने मानव समाजों को एक ऐसी दुनिया के लिये प्रेरित किया, जो समय के साथ-साथ और संयोजित होती गई।

अध्याय
8

# English Comprehension

***Directions:*** *Read the passages carefully and choose the best answer to each question out of the four alternatives.*

**PASSAGE–1**

I have always opposed the idea of dividing the world into the Orient and the Occident. It is, however, the tremendous industrial growth that has made the West what it is, I think the difference, say, between India and Europe in the 12th or 13th century would not have been very great. Differences have been intensified by this process of industrialization which has promoted material well-being tremendously and which is destroying the life of the mind, which is in a process of deterioration, chiefly because the environment that has been created by it does not give time or opportunity to individuals to think. If the life of the mind is not encouraged, then inevitably civilization collapses.

1. The words "the Orient and the Occident" mean
   (a) the West and the East respectively
   (b) the East and the West respectively
   (c) the North and the South respectively
   (d) the South and the North respectively
2. The author believes that the difference between India and Europe in the 12th or 13th century was not very great because
   (a) Indians and Europeans mixed freely
   (b) Indians imitated the European way of living
   (c) Europeans imitated the Indian way of living
   (d) Industrialization had not yet taken place
3. In the opinion of the author, Industrialization is
   (a) an absolute blessing
   (b) an absolute curse
   (c) neither a blessing nor a curse
   (d) more of a curse than a blessing
4. The author says that the mental life of the world is in a process of deterioration because the modern generation is
   (a) endowed with low mental powers
   (b) too lazy to exert its mental powers
   (c) taught that physical activities are more important than mental
   (d) brought up in an environment unfavorable to the growth of the mental life
5. The title that best expresses the central idea of the passage is
   (a) difference between the Occident and the Orient
   (b) impact of Industrialization on our civilization
   (c) advantages of Industrialization
   (d) disadvantages of Industrialization

**PASSAGE–2**

For many years, ship captains navigating the waters of Antarctica have been intrigued by sightings of emerald icebergs. Scientists have now explained their mystery. Their icebergs are turned upside down. Icebergs are blocks of ice that have broken off huge slabs of frozen snow called ice shelves. Their green appearance results from seawater that has frozen at the bottom over hundreds of years. The frozen sea water has dissolved organic matter which gives it a yellow tone and the fresh water 'ice shelf' above has a blue tinge. When the iceberg turns upside done, it appears green through the visual mix of yellow with the blue from below.

6. What is the meaning of 'intrigued'?
   (a) Surprised (b) Fascinated
   (c) Muffled (d) Repulsed
7. What are ice shelves?
   (a) They are huge pieces of chunks of ice
   (b) They are frozen sea water
   (c) They are pieces of ice which look like shelves
   (d) They are huge pieces of ice which are very old
8. What are icebergs?
   (a) Huge chunks of ice floating on water
   (b) Frozen sea water
   (c) Green ice
   (d) Green yellow water below and blue above
9. When the iceberg turns upside down, it appears
   (a) green (b) yellow
   (c) blue (d) white

## डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

**Website : www.drishtiIAS.com**
**E-mail : online@groupdrishti.com**

DrishtiIAS
YouTube Drishti IAS
drishtiias
drishtithevisionfoundation

**641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009**
**Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456**